# उराँव आदिवासियों का करम कथा

**जोहे भगत**
स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

**डॉ. हरि उराँव**
पूर्व विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

करम कहानी में कहा जाता है कि करमा और धरमा दो भाई थे। एक बार राज्य में भयंकर अकाल पड़ा तब करमा और धरमा अपने रोजी–रोटी की खोज में परदेश जाने का निश्चय किये। दोनों भाई परदेश चले गये। उन लोगों को समान उतारने और चढ़ाने का काम मिला। उसे मंलग लदना कहते हैं चूंकि वे बहुत परिश्रमी थे, इसलिए थोड़े ही दिनों में दोनों ने बेसुमार धन कमाये। कुछ दिनों के बाद उन्हें अपने घर–परिवारों की याद सताने लगी। इसलिए अब वे अपने देश लौटने का मन बना लिये और वहाँ से निकल पड़े। रास्ता लम्बा और कठिन तो था ही साथ–साथ कमाया हुआ धन का बोझ भी था रास्ता में चलते–चलते थक कर चूर–चूर हो गये। इसलिए रास्ते में ही कहीं–कहीं पड़ाव कर काली रात भी काटनी पड़ी। दूसरे दिन जब सुबह हुआ तो वे दिशा–मैदान के लिए इधर–उधर हुए। उसी समय धरमा को अनुपस्थित पाकर करमा उसका नजायज फायदा उठाया । कहते हैं कि छोटा भाई धरमा का थैला से कुछ धन चुरा कर अपना थैला में डालकर धरमा के साथ धोखा का काम किया। धरमा चूंकि धार्मिक विचार का व्यक्ति था, इसलिए अपने बड़ा भाई करमा पर तनिक भी संदेह नहीं करता था। वह अपवित्र काम उसी आराध्य देव–वृक्ष करम के नीचे किया । इस तरह अब और चलते–चलते वे अपने गाँव के बिल्कुल नजदीक पहुँच गये, लेकिन इतना थक गये थे कि और आगे एक कदम भी बढ़ना मुश्किल हो गया। अन्ततः गाँव के सीमान में ही फिर से डेरा डालना पड़ा।

वहीं से अनेकों व्यक्तियों को कहला भेजवाया कि हमलोग गाँव सीमान के अन्दर पहुँच चुके हैं, घर वाले हमलोगों को परीछ कर ले जाने के लिए जल्दी आवें । उसी दिन भादो का एकादशी दिन था और गाँव का अखड़ा में करम गाड़कर करम का सेवा और पूजा में सभी लोग लीन थे। करम गीत, नाच और मांदर का ताल से अखड़ा गूंज रहा था इतना सुन्दर प्रकृति की छटा में रीझ–रंग के सुहावना अवसर पर भला किसको किसका परवाह है। कितनों को कहलवाकर भेजने के बावजूद भी जब उनलोगों को कोई लेने नहीं आया तो करमा का खींस उसका माथा में चढ़ गया और अपना छोटा भाई धरमा को ही बुलाने के लिए भेजा। जब धरमा गाँव गया

तो वहाँ का करम का वातावरण देखकर वह भी अपना कर्म को भूल गया। इस तरह से जाने–अनजाने करमा का बहुत बड़ा बेइज्जती हुआ। इधर रात भी बहुत हो चुका था। करमा इतना बड़ा अपमान को सह न सका और अपने ही खुद गाँव गया तो देखता है कि सभी धरमा सहित अखड़ा में करम का सेवा–पूजा

करने में लीन है। करमा इस बात से बड़ा दुखित हुआ और क्रोधित होकर बोला– तुमलोग कौन करमा का सेवा–पूजा कर रहे हो? असली करमा तो यहाँ मैं हूँ, कह कर अखड़ा में गड़ा हुआ करम डाल को गुस्सा से उखाड़ कर पैरों से रौंद डालता है और उसे गन्दुर गड़हा में बड़ी ही निर्दयता पूर्वक फेंक डालता है। जो नदी के पानी के साथ बहकर सात समुद्र पार चला गया। उसके बाद अपना बाल–बच्चों को भी मार–पीट करने लगता है।

इतना होना था कि उसी दिन से करमा के उपर करम का कोप शुरू हो गया । करमा के ऊपर विभिन्न प्रकार का दुःख तकलीफ और झंझट का पहाड़ टूटने लगा । अन्न–धन, लोग–लक्ष्मी और सभी सुख शान्ति धीरे–धीरे मेरे कुछ ही दिनों में ही बिल्कुल समाप्त हो गया और बाल–बच्चे खाने के लिए दाने–दाने के लाले पड़ गये। बेसुमार कमाया हुआ धन क्षणिक समय में ही विल्कुल समाप्त हो गया ।

करमा की पत्नी को दूसरों के खेत में काम करने के लिए मजबूर होना पड़ा। कहा जाता है कि एक दिन धरमा का रोपा रोपने के लिए मदाईत किया गया और मदाइत में सबको खाना खिलाना पड़ता है। जैसे दूसरों को मदइत के लिए कहा गया, वैसा ही करमा को भी कहा गया, लेकिन करमा रोपा खेत नहीं गया। केवल उसका पत्नी रोपा रोपने गयी। धरमा सबको खाने–पीने के लिए इज्जत के साथ निमंत्रण दिया, कहीं–कहीं पर करमा को खाने के लिए निमंत्रण नहीं मिला की बात कही जाती है लेकिन करमा उसमे शामिल नहीं हुआ और अपना पत्नी को भी शामिल होने नहीं दिया। लेकिन उस दिन की परिस्थिति इतनी नाजुक थी, उसके बाल–बच्चे भूख से तड़पने तथा रोने कल्पने लगे। करमा की पत्नी को यह दुःख सहा नहीं गया कटोरी लेकर धरमा के घर मांड़ मांगने गयी। धरमा की पत्नी मांड़ को कटोरी पर डाल रही थी कि दुर्भाग्यवस वह मांड़ जमीन पर गिर गया । इन सबको सुनकर करमा के मन में भीतर ही भीतर क्रोध का सीमा और उपर होने लगा । ठीक उसी रात गुस्साया हुआ करमा धरमा का रोपा खेत में गया तथा ताक पाकर सभी रोपा को उखाड़ उखाड़ कर फेंकने लगा। लेकिन दैवी शक्ति के कारण सभी उखाड़ कर फेंका हुआ रोपा पीछे उलट कर देखने से पता चला कि वह जस का तस है। उसी समय उसे एक आवाज सुनाई पड़ती है, कहा जाता है कि करमा तुम्हारा मन के भीतर पाप का डेरा हो गया है। तुम अपना भाई का धन चुराया। सभों के सामने अखड़ा में गाड़ा हुआ करम राजा का अपमान किया । सुनो जब तक तुम करम राजा के पास जा कर उससे क्षमा नहीं मांगोगे तब तक तुम्हारा खराब दिन कभी नहीं सुधरेगा सो जाओ करम राजा को भादो एकादशी के दिन प्यार से लाकर अखड़ा में गाड़ो विधि–विधान के साथ पूजा–पाठ करो, तभी तुम्हारा बिगड़ा भाग्य उबरेगा । ऐसी दिव्य वाणी को सुन कर करमा का हृदय में दया और प्रेम का धार उमड़ पड़ा । बुरा से अच्छा काम करने की ओर उसका हृदय ढालने लगा। उसका मन में नेक–धरम का भाव जागने लगा उसका अन्धकार मय मन में प्रकाश का किरण दिखाई देने लगा। उसका हृदय बिल्कुल परिवर्तन हो गया और सोचने लगा कि पाप और बुराई का रास्ता में चलकर जीता नहीं जा सकता है। अपना किया हुआ पाप पर पछताने लगा। इस तरह करमा के मन में ज्ञान का दरवाजा खुल गया । अब करमा दिव्य शक्ति का दिया हुआ आदेश के अनुसार भादो एकादशी के दिन करम राजा को अखड़ा में गाड़ने के लिए खोजने निकल पड़ा । रास्ता बड़ा कठिन और दुर्गम था, लेकिन करमा अपना आत्म विश्वास के साथ दृढ़ संकल्प कर सभी प्रकार के विघ्न बाधाओं का सामना करते हुए करम का खोज में चलने लगा। कहा जाता है कि चलते–चलते वह बहुत थक जाता है और बहुत जोरो से प्यास लगती है। एक तलाव के पास पानी पीने जाता है और अपना अंजुरा में पानी लेकर पीने के लिए उपर उठाता है तो देखता है कि पानी में बहुत सारे कीड़े भरे पड़े हैं सो वह पानी नहीं पी सका । वह उदास मन लिए

आगे बढ़ने लगा । तलाव का मालिक उसे पूछा राहगीर तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो ? करमा अपना आराध्य देव–वृक्ष करम आपवीती बात बतलाया । उसी समय तालाब का मालिक भी करमा से अनुरोध किया कि मेरा तकलीफ का उपाय याने तलाव का पानी में कीड़ा लगने का कारण और उसका निदान भी करम देवता से पूछ कर आना और लौटते बार हमे बतलाते जाना ।

उसके बाद करमा आगे बढ़ने लगा। करमा को खूब जोरों से भूख सताने लगी । आगे जाते–जाते करमा देखा रास्ता के किनारे आम का एक . बगीचा है और सारे पक्के आम पेड़ में लटके हुए हैं। कुछ–कुछ आम बारह मसिया होते हैं जो सावन भादो मे भी पकते हैं कहीं–कहीं आम के जगह गुलर का जिक्र किया जाता है। करमा बगीचा के समीप जाता है और पक्का आम को खाने के लिए तोड़ता है और खाने के लिए ज्योंही मुँह की ओर बढ़ता है तो देखता है कि उसमें भी सारे कीड़े भरे पड़े हैं। इस तरह कहिए की उसका फाटल नशीब, उस आम को भी खा नहीं सका। जब करमा फिर आगे बढ़ने लगा तो बगीचा का मालिक करमा के बारे में पूछा और करमा ने उसे भी अपना यात्रा वृतान्त बतलाया। तब उसने भी करमा से अपना बगीचा के आम फल में कीड़ा लगने का कारण और उसका उपाय करम देवता से पूछ कर आने को कहा। इस तरह करमा अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ता गया ।

कुछ दूर और आगे जाते–जाते उसे एक गाय मिली जो घोर संकट में पड़ी हुई थी। क्योंकि गाय और बछड़ा में स्वभाविक प्रेम भाव समाप्त हो गया था। चूंकि करमा बिल्कुल भूखा प्यासा था गाय का दूध पीना चाहा। जब पीने के लिए दूध दूहने लगा तो दूध की जगह खून निकलने लगा। इस तरह करमा गाय का दूध भी नहीं पी सका। गाय का मालिक भी करमा से दूध के जगह खून निकलने का कारण और निदान करम देवता से पूछ कर लेते आने को कहा ।

आगे जाते जाते करमा को और ज्यादे भूख और प्यास लगने लगी। उसी समय उसे गाँव में ढेकी कूटने की आवाज सुनाई पड़ी, करमा वहाँ पहुँचा और ढेकी कूटने वाली भोगताइन औरत से खाने के लिए चिंऊड़ा मांगा। महिला कहने लगी कि देखो न क्यों हमारा चिऊड़ा ही नहीं बनता है। इस तरह भोगताइन भी करमा से अपना चिउड़ा बनने का निदान लाने का
आग्रह किया । फिर करमा आगे बढ़ता गया, जाते–जाते एक मगरमच्छ मिला जो एक पानी का रहने वाला जानवर होकर गरम जमीन का बालू में तड़प रहा था। कहीं–कहीं लोग कछुवा का भी जिक्र करते हैं। मगरमच्छ भी करमा का प्रयोजन पूछा और अपना कष्ट का कारण और निराकरण लौटती बार लेते आने को कहा ।

आगे जाते जाते करमा को और ज्यादे भूख और प्यास लगने लगी। उसी समय उसे गाँव में ढेकी कूटने की आवाज सुनाई पड़ी, करमा वहाँ पहुँचा और ढेकी कूटने वाली भोगताइन औरत से खाने के लिए चिंऊड़ा मांगा। महिला कहने लगी कि देखो न क्यों हमारा चिऊड़ा ही नहीं बनता है। इस तरह भोगताइन भी करमा से अपना चिउड़ा बनने का निदान लाने का

आग्रह किया । फिर करमा आगे बढ़ता गया, जाते–जाते एक मगरमच्छ मिला जो एक पानी का रहने वाला जानवर होकर गरम जमीन का बालू में तड़प रहा था। कहीं–कहीं लोग कछुवा का भी जिक्र करते हैं।

मगरमच्छ भी करमा का प्रयोजन पूछा और अपना कष्ट का कारण और निराकरण लौटती बार लेते आने को कहा ।

करम देवता का खोज में निकला करमा को अब बहुत दिन लग गया। अन्त में करमा को एक बहुत बड़ा समुद्र दिखाई दिया और उसी सात समुद्र पार में करमा को एक आराध्य देव–वृक्ष करम का पेड़ दिखाई दिया। करम राजा को देखकर करमा के मन में खुशी का ठिकाना नहीं रहा । अब अपने किये हुए पाप से छुटकारा पाने की आशा और अधिक बढ़ गयी। लेकिन सवाल था कि उतना बड़ा समुद्र को पार कैसे किया जाय? उसके लिए वही सबसे बड़ा परीक्षा था । लेकिन दुःख और कष्ट झेलने वाला मगरमछ करमा को मदद करने का वचन दिया और अपने पीठ पर बैठा कर उसे समुद्र पार करम पेड़ तक पहुँचाया, इतना बड़ा साहस का काम करने के लिए करमा तनिक भी नहीं घबड़ाया। इस तरह करमा करम देवता के पास पहुँचकर अपना घुटना टेककर माफी मांगा। दैवी शक्ति के कथानुसार करमा का तीन सुन्दर कोमल डाल काटकर अपने काँधा में ढोकर लाने लगा। आराध्य देव–वृक्ष करम आने समय क्रमशः बारी–बारी से सबों को उसका दुःख का कारण और निदान बतलाते गया । सबसे पहले मगरमच्छ को कहा कि करम उपवास करमइत लोग जब नदी में स्नान करने गयी थी, तब तुमने एक को निगल लिया था । इसी कारण तुम्हें ऐसा कष्ट को सहन करना पड़ रहा है। सो आइन्दे से ऐसी गलती न करना सब ठीक हो जायेगा। आते–आते चूड़ा कूटने वाली महिला को कहा कि तुम पैला में कोड़हा छाब कर चूड़ा करम उपासल वालो को कम चूड़ा देकर उसके साथ धोखा किया है। यही कारण. है कि तुम्हारा चूड़ा नहीं बनता है। अब से ऐसा गलती नहीं करेगी सब ठीक हो जायेगा उसके बाद गाय मालिक के पास आया और कहा, कि जब गाय बियाती है तो प्रेम से अगल–बगल में खिरसा बाँट कर खाया जाता है– उसे तुमने ऐसा नहीं किया और जब करम उपासल पूजा के लिए दूध मांगने गयी तो तुम उसे दूध नहीं दिया। इसी का कोप है। आइन्दे ऐसा नहीं करना। उसके बाद लौटते समय बगीचा के मालिक के पास गया और कहा कि भूखे–प्यासे राहगीरों को तुमने फल खाने नहीं दिया इसलिए तुम्हारा बगीचा का फल में कीड़ा लगा। भविष्य में अब ऐसा नहीं करोगे, सब ठीक हो जायेगा। अन्त में तालाब का मालिक को कहा कि तलाब बनाने के बाद उसका विधिवत पूजा किये बिना उसका पानी को व्यवहार किया था। करम उपवास व्रतियों को तालाब में स्नान करते समय डांट–फटकार कर भगा दिया। इसलिए आइन्दे से ऐसा कभी नहीं करना। करमा ने करम डाल को भादो एकादशी को विधिवत गाड़कर पूजा अर्चना किया उसके बाद करमा और धरमा खुशी–खुशी राइज राज करने लगे। इस तरह से करम कहानी का यहाँ अन्त होता है।

## संदर्भ सूची

सरना फूल
उराँव संस्कृति
उराँव–सरना धर्म और संस्कृति
आराध्य देव–वृक्ष करम
कुँडुख़ कत्थअइन अरा कत्थटूड़